अभिनवगुप्त के अनुसार ख्यातिपंचक

अनुराग त्रिपाठी*

अभिनवगुप्त भारत के महान् विद्वान् महान् दार्शनिक और महान् साहित्याचार्य है। हम उनकी तान्त्रिक विचारधारा से भले ही सहमत न हो किन्तु उन्होंने संस्कृत साहित्य की जो अपूर्व सेवा की है उसके लिए भारत चिरकाल तक उनका ऋणी रहेगा। उनकी साहित्य–विषयक दो मुख्य कृतियाँ है– एक ध्वन्यालोक–लोचन और दूसरी अभिनवभारती। ये दोनों ही टीका ग्रन्थ हैं।

अभिनवगुप्त ने अपने ग्रन्थ में पाँच दार्शनिक सिद्धान्तों की ओर संकेत किया हैं उन सबको मिलकार ख्यातिपंचक नाम से कहा जाता है। भ्रमस्थल में होने वाली प्रतीति के विवेचन और विश्लेषण के प्रसंग में इस ख्याति–पंचक का वर्णन दर्शन ग्रन्थों में किया गया है। हम नाट्य या भ्रम आदि के स्थल में जिस वस्तु को देखते हैं उसका वास्तविक स्वरूप क्या है इस विषय में विविध दर्शनों में पाँच प्रकार के मत पाए जाते हैं। इन्हीं को ख्याति–पंचक या पंच–ख्याति नाम से कहा जाता है। ख्याति शब्द का अर्थ ज्ञान है। ख्याति पंचक का अर्थ है कि इस प्रकार के स्थलों में विभिन्न दार्शनिकों की दृष्टि से पाँच प्रकार की वस्तुओं का ज्ञान होता है।

तच्च ज्ञानाकारमात्रं, आरोपितस्वरूपं, सामान्यात्मकं, तत्कालनिर्मितरूपं अन्यद्वा किचिद्वस्तु नात्राप्रस्तुतलेखनेन आत्मनो दर्शनान्तरकथापरिचयप्रकटफलेन प्रकृतवस्तु निरूपणविघ्नमाचरन्तः सहृदयान् खेदयामः। और वह (अनुव्यवसाय में भासने वाली वस्तु) केवल (1) ज्ञानकार रूप है अथवा (2) आरोपितस्वरूप है, अथवा (3) सामान्यात्मक है या (4) तत्काल उत्पन्न होने वाली है अथवा (5) अन्य किसी प्रकार की है इस प्रसंग में दूसरे दर्शनों के विषय में अपने ज्ञान को प्रकट करने वाले अप्रस्तुत (विषय को) लेख द्वारा प्रस्तुत विषय के निरूपण में विघ्न डाल कर हम सहृदयों को खिन्न (परेशान) नहीं करना चाहते हैं।

आत्मख्यातिरसत्ख्यातिरख्यातिः ख्यातिरन्यथा।
तथानिर्वचनीयख्यातिरित्येतत् ख्यातिपंचकम्।।

आत्मख्यातिवाद–

आत्मख्यातिवाद के समर्थक विज्ञानवादी का कहना है कि रजत का प्रत्यय वस्तुतः मन के भीतर होता है, भ्रमवश हम रजत को बाहर देखते हैं। किन्तु हमारा अनुभव यह है कि रजत बाहर और सामने दिखाई देता है। आत्मख्याति में आत्मा शब्द का अर्थ यहाँ विज्ञान लेना चाहिए। इस सिद्धान्त में घटादि की प्रतीति स्थल में भी विज्ञान ही घटादिरूप में भासता है। इसी प्रकार अभिनवकाल में रामादि के रूप में भी वही विज्ञान भासता है। इसी की ओर संकेत करते हुए यहाँ ग्रन्थकार ने तच्चज्ञानाकारमात्र यह पक्ष बताया है।

असत्ख्यातिवाद–

बौद्धों का दूसरा शून्यवादी सम्प्रदाय माध्यमिक सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। माध्यमिक मत में न वाह्य अर्थ है और न विज्ञान। दोनों के स्थान पर एकमात्र शून्य ही एक तत्त्व है। शून्यं तत्त्वं भावो विनश्यति वस्तुधर्मत्वाद्विनाशस्य यह इसका सिद्धान्त है। इस

शोधच्छात्र संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सिद्धान्त के अनुसार यह शून्य तत्त्व ही सारी प्रतीतियों में नानारूप में भासता है। क्या भ्रमस्थल में और क्या नाट्य में सर्वत्र वहीं शून्यतत्त्व समान रूप से भासता है। इसी का नाम शून्यवाद है। अभिनवगुप्त ने अभिनवभारती में केवल विज्ञानवाद या आत्मख्याति का ही उल्लेख किया है।

अख्यातिवाद–

अख्यातिवाद–सिद्धान्त प्रभाकर मीमांसक का है। इनके अनुसार भ्रमज्ञान वस्तुतः दो ज्ञानों का मिश्रण होता है, एक साक्षात् अनुभव और दूसरा स्मृति–ज्ञान। शक्ति में रजत के भ्रम में हमें सामने एक सफेद चमकती वस्तु का अनुभव होता है, किन्तु उस वस्तु की जाति का ज्ञान नहीं होता। समानता के कारण सामने की वस्तु हममें रजत की स्मृति जगाती है– रजत के संस्कार पहले से ही हमारे मन में होते है। किन्तु रजत के इस अनुभव में इसे पहले अतीत में देखा था यह। भाव नहीं होता पहले का देखा हुआ अपने को सिर्फ दृश्यमान वस्तु के रूप में उपस्थित करता है। इस प्रकार भ्रम–ज्ञान में दो अनुभव रहते हैं जिनका भेद–ग्रहण दर्शक नहीं करता है। अभिनवगुप्त ने इस मत का संकेत **'सामान्यात्मकम्'** पद से किया है।

अन्यथाख्याति–

यह नैयायिकों का सिद्धान्त है। इसके अनुसार भ्रान्त ज्ञान की व्याख्या की है शुक्त की उपस्थिति में दोषवश दर्शक सामने वाली वस्तु के सामान्य गुणों का अनुभव करता है, पर उसके विशिष्ट भेदक गुणों को नहीं देखता। ये सामान्य विशेषताएँ किसी दूसरी चीज (रजत) से सम्बन्धित होती है और उस वस्तु की स्मृति जगाती है। इन स्मृति–चित्रों द्वारा हमारी इन्द्रिय दूसरी वस्तु (रजत बीच एक प्रकार का अलौकिक सन्निकर्ष ज्ञान–लक्षण सन्निकर्ष स्थापित हो जाता है। जिस रजत से आँख का अलौकिक सन्निकर्ष होता है उसे सामने मौजूद वस्तु से जोड़ दिया जाता है। ज्ञान लक्षण सन्निकर्ष से जो रजत देखा जाता है वह वस्तुतः दूसरी जगह होता है। किन्तु उसे सामने की वस्तु में संस्थित कर दिया जाता है। इसी सिद्धान्त की ओर संकेत करते हुए अभिनवभारती में **आरोपितस्वरूप** पद का प्रयोग किया है।

अनिर्वचनीयख्यातिवाद–

अद्वैत–वेदान्त भ्रम की अपनी व्याख्या देता है जिसे अनिर्वचनीय ख्याति कहते है भ्रम में जो पदार्थ दीखता है उसे हम न सत् कह सकते हैं, न असत्। वह स्मृति पदार्थ भी नहीं है। भ्रम में जो वस्तु दीखती है वह अनिर्वचनीय होती है, वह हमारे सामने मौजूद होती है वह वस्तुतः अविद्या की सृष्टि या आरोप का कार्य होती है।

अद्वैत वेदान्त के अनुसार भ्रान्त ज्ञान या भ्रम निर्विषयक या विषयहीन नहीं होता। भ्रान्त ज्ञान का भी विषय होता है। स्वप्न में भी ज्ञान के विषय रहते हैं। ये विषय–वस्तुएँ सत् और असत् से विलक्षण अनिर्वचनीय होती है। वे अज्ञान या अविद्या का कार्य होती है। भ्रान्त ज्ञान का विषय स्मृति के विषय में इस बात में भिन्न होता है कि वह हमें सामने दिखाई देता है, जबकि भ्रम दूर होता है तो हमें यह ज्ञान होता है कि यह रजत नहीं है। यह ज्ञान नहीं होता कि भ्रान्त ज्ञान का विषय रजत किसी दूसरी जगह है जैसा अन्यथाख्यातिवादी मानते है। इस सिद्धान्त की ओर संकेत करने के लिए अभिनवगुप्त ने **तत्कालनिर्मितम्** पद का प्रयोग किया है।

इस प्रकार अभिनवभारती में पंचख्यातियों के सिद्धान्त की चर्चा की गयी है।

सन्दर्भ

1. अभिनवभारती